सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

RNI No: UPHIN/2023/86769

www.swarajindianews.com

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

मूल्यः ₹02

स्वराज इंडिया

सांध्यकालीन समाचार पत्र

कानपुर, शुक्रवार, 04 जुलाई, 2025
वर्षः 02, अंकः 181, पृष्ठः 8+4

सीएम योगी ने आम महोत्सव 2025 का किया शुभारंभ

» Pg 12

इनसाइड पत्नी-बेटी पर हैवान बना पति, डेढ़ साल की बच्ची को मार डाला... » Pg 09

पहले पति से तलाक, फिर सास की हत्या ने खोली पूरी कहानी

लिव-इन पार्टनर की हादसे में मौत के बाद उसके बड़े भाई और पिता से बन गए संबंध

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

झांसी। उत्तर प्रदेश के झांसी जिले से एक ऐसा मामला सामने आया है जिसने पूरे इलाके को चौंका दिया है। घटना की मुख्य पात्र पूजा जाटव की चर्चा सोशल मीडिया पर खूब है। पूजा ने अपने रिश्तों का ऐसा जाल बुना जिसमें प्यार, लालच और हत्या की परतें छुपी हैं। कथित सास की हत्या होते ही पूजा के कई कारनामे एक के बाद एक सामने आ गए।

पूजा की पहली शादी ग्वालियर में हुई थी। बताया जा रहा है कि पति से अनबन के कारण उसने तलाक ले लिया। बताया जा रहा है कि वो घरेलू हिंसा की शिकार थी। तलाक के सिलसिले में कोर्ट-कचहरी का चक्कर लगाने के दौरान पूजा की मुलाकात कल्याण नाम के युवक से हुई। यहीं से पूजा के प्यार की नई कहानी शुरू हुई।

लिव-इन पार्टन की सड़क हादसे में हुई मौत : सबकुछ ठीक चल रहा था। अचानक पूजा के लिव-इन पार्टनर

- पूजा के कई कारनामे एक के बाद एक सामने आ गए
- घरेलू हिंसा के चलते पहले पति से ले लिया था तलाक
- लिव-इन पार्टनर की मौत के बाद घरवाले बहू मान ले आए घर
- बहन और उसके प्रेमी संग मिलकर की सास की हत्या

कल्याण की सड़क हादसे में मौत हो गई। इसके बाद कल्याण के घर वाले पूजा को बेटे की विधवा मानकर अपने घर ले आए। उन्होंने उसे बहू माना। घर में रहने के दौरान पूजा का संबंध कल्याण के बड़े भाई संतोष से बन गए।

कथित ससुर के साथ भी रिलेशन में थी पूजा : इधर संतोष के साथ रिलेशन के चलते उसकी पत्नी ने घर में बवाल काट दिया। संतोष की मां भी इन बातों को लेकर काफी परेशान थी। दरअसल पूजा का संबंध केवल संतोष के साथ नहीं बल्कि ससुर के साथ भी बनने लगे थे। इधर जेठ संतोष के साथ रिलेशन के दौरान पूजा को एक बच्चा भी हो गया। इसके बाद तो घर में बवाल ही मच गया। संतोष की पत्नी ने पूजा के खिलाफमोर्चा खोल दिया। इस विवाद के बाद पूजा ने बड़ा दांव खेला। दांव सही चला पर सास बीच में आ गई।

सास की कर दी हत्या : पूजा ने जेठानी से विवाद के बाद एक शर्त रखी। उसने कहा कि वो जेठ और ससुर से रिलेशन खत्म कर देगी यदि परिवार की 18 एकड़ जमीन में से उसे कल्याण का हिस्सा यानी 8 बीघा मिल जाए। इस बात पर ससुर, जेठ और जेठानी राजी हो गए पर सास सुशीला देवी ने विरोध कर दिया। इधर सास को रास्ते से हटाने के लिए पूजा ने अपनी बहन कामनी और उसके प्रेमी अनिल वर्मा के साथ खतरनाक प्लानिंग कर ली।

एक गलती से फंसी पूजा, खुल गई पूरी साजिश : सास के अंतिम संस्कार के समय पूजा गायब हो गई, जिससे पुलिस को शक हुआ। पूछताछ में पूजा ने सबकुछ कबूल कर लिया। बहन कामनी को भी गिरफ्तार किया गया और अनिल वर्मा को एनकाउंटर के बाद पकड़ा गया. पुलिस का कहना है कि इस पूरी हत्या की मास्टरमाइंड पूजा जाटव थी, जिसने जमीन के लालच और अवैध संबंधों को छुपाने के लिए सास की हत्या करवाई।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि

ईदगाह से जुड़ी संपत्ति को विवादित घोषित करने से इनकार

प्रयागराज। मथुरा स्थित श्रीकृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह मामले में शुक्रवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद हाईकोर्ट ने कृष्ण जन्मभूमि शाही ईदगाह से जुड़ी संपत्ति को विवादित घोषित करने से इनकार कर दिया।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि व शाही ईदगाह मामले में शुक्रवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट में शाही ईदगाह को विवादित ढांचा घोषित करने वाली याचिका पर सुनवाई हुई। इससे पहले कोर्ट ने हिंदू पक्ष की याचिका पर मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया था।

साथ ही निर्णय के लिए चार जुलाई की तारीख नियत की थी। श्रीकृष्ण जन्मभूमि मुक्ति न्यास के अध्यक्ष महेंद्र प्रताप सिंह ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में मांग की है कि शाही ईदगाह को विवादित ढांचा घोषित किया जाए, जैसा कि बाबरी मस्जिद प्रकरण में किया गया था।

प्रशासन सख्त

एयरपोर्ट के ठीक पीछे बनीं 15 अवैध रूप से ऊंची इमारत बन रहीं खतरा

एयरपोर्ट के पास 15 मकानों की ऊपरी मंजिलें होंगी ध्वस्त

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। अहमदाबाद एयरपोर्ट पर हुए हादसे ने देश भर में एयरपोर्ट के आसपास की ऊंची इमारतों, मोबाइल टॉवर्स के खतरे की तरफ भी ध्यान खींचा है। हादसे के बाद लखनऊ के चौधरी चरण सिंह इंटरनेशनल एयरपोर्ट के आसपास हो रहे अतिक्रमण को लेकर सवाल खड़े होने लगे हैं। सवाल यह कि आखिर रोक के बाद भी इस दायरे में निर्माण कैसे हो गए?

अगर भविष्य में कहीं कोई कोई हादसा हो गया तो इसका जिम्मेदार कौन होगा?

हालात यह है, कि एयरपोर्ट के आसपास ऊंची-ऊंची इमारतें बनकर तैयार हो गईं। कूड़े-कचरे का ढेर भी जमा होने लगा और ऊंचे-ऊंचे मोबाइल टावर भी लग गए। हाल ही में एयरपोर्ट अथॉरिटी ने एक रिपोर्ट जारी की है. इसमें साफ कहा गया है, कि लगभग 600 से ज्यादा ऊंची बिल्डिंग्स, पेड़ और मोबाइल टावर कभी भी विमान की उड़ान के लिए खतरा बन सकते हैं। एयरोनॉटिकल इनफॉरमेशन पब्लिकेशन सप्लीमेंट की तरफ से जारी रिपोर्ट में यह आशंका जताई गई है, कि इन इमारतों, मोबाइल टावर की बाधाओं के कारण विमान की उड़ान को खतरा है।

एयरपोर्ट अथॉरिटी पहले कर चुका आगाहः एयरपोर्ट अथॉरिटी की तरफसे लखनऊ विकास प्राधिकरण और नगर निगम को कई बार इसे लेकर लेटर भेजे जा चुके हैं, लेकिन अवैध निर्माण धड़ल्ले से जारी है। जब अहमदाबाद में इतना बड़ा हादसा हो गया, तो एयरपोर्ट अथॉरिटी ने फिर एक बार इसकी रिपोर्ट तैयार कर संबंधित विभागों को भेजने की तैयारी की है।

क्या हैं नियम

- 500 मीटर के दायरे में अधिकतम 11 मीटर ऊंचे निर्माण हो सकते हैं
- 201 से 300 मीटर तक सिर्फ दो मंजिल ऊंची बिल्डिंग ही निर्मित की जा सकती है
- 101 से 200 मीटर तक एक मंजिल तक ही निर्माण हो सकता है
- एयरपोर्ट के 100 मीटर का दायरा 'नो कंस्ट्रक्शन जोन' होता है
- 500 मीटर के दायरे में जिन मकानों के दरवाजे एयरपोर्ट की तरफ खुलते हैं, उन्हें बंद करना होता है
- इन मकानों की छत पर जाना भी प्रतिबंध होता है
- 1000 मीटर के दायरेमें कोई बाजार नहीं लगाने का है नियम

साढ़ पुलिस की ढिलाई से पीड़ित पर फिर हमले का खतरा

» साढ़ पुलिस की लापरवाही से अब तक फरार हैं तीन नामजद, वायरल वीडियो में हमलावर साफ नजर आ रहे

» पीड़ित परिवार को दोबारा हमले का डर, प्रशासनिक सुस्ती से अपराधियों के हौसले बुलंद

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

कानपुर। थाना साढ़ क्षेत्र के कुड़नी गांव में 20 जून को जमीन विवाद को लेकर हुए खूनी संघर्ष के बाद अब पुलिस की लापरवाही अपराधियों के हौसले बढ़ा रही है। घटना में पीड़िता कनकलता के पति चन्द्रप्रकाश पर फावड़े से जानलेवा हमला किया गया था। एफआईआर में नामजद पांच में से केवल एक आरोपी को जेल भेजा गया है, बाकी अब भी फरार हैं और खुलेआम घूम रहे हैं।

वायरल वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि आरोपी संतोष शुक्ला अपने बेटों गौरव और अंकित के साथ मिलकर मारपीट कर रहा है, और फावड़े से वार करते समय उनके हाथ में हथियार भी नजर आ रहा है। इसके बावजूद पुलिस अब तक संतोष, गौरव और अंकित की गिरफ्तारी नहीं कर सकी है। घायल चन्द्रप्रकाश को भीतरगांव सीएचसी से उर्सला अस्पताल रेफर किया गया था, जहां उसकी हालत अब भी नाजुक बनी हुई है। वीडियो के बावजूद कार्रवाई में देरी से पीड़ित पक्ष नाराज है और उन्हें डर है कि आरोपी यदि जल्द गिरफ्तार नहीं किए गए तो दोबारा कोई बड़ी घटना अंजाम दे सकते हैं। आरोपियों द्वारा मुकदमे से नाम हटवाने के प्रयास भी शुरू हो चुके हैं। पीड़िता का कहना है कि यदि पुलिस की यही निष्क्रियता रही तो गांव का माहौल बिगड़ सकता है। परिजन लगातार इस बात से डरे हुए हैं कि आरोपियों की गिरफ्तारी न होने से वे वापस लौटकर फिर से जानलेवा हमला कर सकते हैं। साढ़ पुलिस की निष्क्रियता अब प्रशासन के लिए सवाल बनती जा रही है, और ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ रहा है।

जाजमऊ में फुटपाथ धंसने से टॉवर हुआ टेढ़ा

दुकानें कराईं बंद,मरम्मत शुरू होने के बाद खिसकी गई थी मिट्टी

रोड पर फुटपाथ धंसने से टॉवर टेढ़ा हो गया। इस पर दहशत में आसपास के दुकानें बंद करा दी गईं। सरैयां चौराहे के निवासी मोहम्मद नईम, गुफ्फार, अकरम आदि ने बताया कि सरैयां चौराहे पर डॉट नाले के पास करीब छह साल पहले एक मोबाइल कंपनी का टॉवर फुटपाथ पर लगाया गया था।

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। दुकानदार साबिर ने बताया कि उनकी चमड़े की दुकान समेत पांच दुकानों को पुलिस ने बंद करा दिया था। वहीं, पुलिस ने नगर निगम कर्मियों को बुलाकर टॉवर के नीचे मिट्टी को भरवा दिया गया है, जिसके बाद लोगों ने राहत की सांस ली।

कानपुर में जाजमऊ थानाक्षेत्र के वीआईपी इस दौरान सुरक्षा के लिहाज से लोगों ने काफी विरोध किया था। 20 जून को बारिश होने से सरैयां चौराहे के पास समेत सड़क धंस गई थी। फुटपाथ धंसने के बाद नगर निगम की टीम ने गड्ढा खोदकर काम शुरू कराया।

लेकिन गड्ढा खोदे जाने से उसके बगल में स्थित एक मोबाइल कंपनी के टॉवर के नीचे की मिट्टी खिसक गई।

इधर, गुरुवार को टॉवर टेढ़ा होने से इलाके में दहशत फैल गई। वहीं, पुलिस ने आस-पड़ोस की दुकानें भी बंद करा दी। साथ ही नगर निगम की टीम को बुलाकर टॉवर के अगल-बगल मिट्टी भरवाई। दुकानदार साबिर ने बताया कि उनकी चमड़े की दुकान समेत पांच दुकानों को पुलिस ने बंद करा दिया है। थाना प्रभारी अजय प्रकाश मिश्र ने बताया कि नगर निगम कर्मियों को बुलाकर टॉवर के नीचे मिट्टी को भरवा दिया गया है, जिसके बाद लोगों ने राहत की सांस ली।

तांत्रिक क्रिया के साथ मां काली की प्रतिमा को किया खंडित

» स्थानीय लोगों में आक्रोश,दो आरोपी गिरफ्तार

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। कानपुर में महाराजपुर थाना क्षेत्र के भेवली गांव में मां काली मंदिर में भोर पहर लगभग चार बजे काली प्रतिमा को खंडित कर दिया गया। मंदिर के पुजारी और ग्रामीणों द्वारा दो अधेड़ व्यक्तियों को मंदिर के अंदर से ही पकड़ा गया, जिसमें से एक गैर समुदाय का है।

मंदिर के पुजारी पारस ने बताया कि मध्य रात्रि दो अधेड़ व्यक्ति मंदिर के पास मोटरसाइकिल खड़ी करके अंदर चले गए और भगवान श्रीराम और अन्य देवी-देवताओं को गालियां देते हुए तोड़फोड़ कर रहे थे। आवाज सुनकर पुजारी ने अपने साथ रह रहे एक बच्चे लवकुश पुत्र रामगोपाल को गांव के अंदर भेजा।

दो आरोपियों को हिरासत में लिया

इसके बाद शोर मचाकर अन्य लोगों को बुलवाया। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने तोड़फोड़ कर रहे दोनों अधेड़ व्यक्तियों को मंदिर के अंदर ही बंद कर दिया और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस द्वारा दोनों आरोपियों को हिरासत में लिया गया और पूछताछ की जा रही है।आरोपियों में एक का नाम शीतलाप्रसाद निषाद (50) पुत्र शत्रुघ्न निवासी 112 श्यामनगर कानपुर और दूसरे का नाम शाहिद (45) निवासी बासमंडी है। एसीपी चकेरी अभिषेक पांडेय और महाराजपुर थानाध्यक्ष संजय कुमार पांडेय ने घटनास्थल का निरीक्षण किया है।

प्रतिमा बनवाने के लिए कहा गया है

उन्होंने बताया कि मंदिर की प्रतिमा काफी पुरानी है और तत्काल इतनी बड़ी प्रतिमा मिलना मुश्किल है। प्रतिमा बनवाने के लिए कहा गया है, फिलहाल प्रतिमा के खंडित भाग दाहिनें हाथ को प्लास्टर की मदद से जोड़ दिया गया है। इससे पूजा-पाठ प्रभावित न हो, जितनी जल्दी प्रतिमा बन जाएगी।उसको भव्य रूप से पुनः प्राण प्रतिष्ठा कराई जाएगी। एसीपी चकेरी अभिषेक कुमार पांडेय ने बताया कि दोनों आरोपी नशे में धुत पाए गए हैं। शरारत करते हुए ही प्रतिमा को खंडित किया गया है। दोनों आरोपियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करते हुए तहरीर के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेजा जा रहा है।

टोकन नंबर से डीएम सुनेंगे समस्या,मिलेगी चाय-बिस्कुट

कैफे की तर्ज पर, डीएम ऑफिस में पहली बार टोकन डिसप्ले मॉनिटर की होने वाली है व्यवस्था

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। डीएम ने बताया कि टोकन से कम समय में लोगों की समस्या सुनी जाएंगी। यहां आने वाले फरियादियों को चाय और बिस्कुट भी दिया जाएगा।

» जिसका जनता दरबार में आएगा नंबर उसको बाहर बैठे चल जाएगा पता

मैनुअल टोकन, चाय, कुर्सी और पंखा की पहले से है व्यवस्था

कानपुर कलक्ट्रेट में होने वाले जनता दर्शन में रोज 200 से 250 फरियादी पहुंच रहे हैं। भीड़ होने से लोगों को परेशानी होती है। इसे देखते हुए जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने टोकन व्यवस्था शुरू की है। अब हर फरियादी को पहले टोकन नंबर दिया जाएगा, उसी के अनुसार उनकी फरियाद सुनी जाएगी।डीएम ने बताया कि टोकन से कम समय में लोगों की समस्या सुनी जाएंगी। यहां आने वाले फरियादियों को चाय और बिस्कुट भी दिया जाएगा। नई व्यवस्था गुरुवार से लागू कर दी गई है। इससे पहले जनता दरबार में आने वाले लोगों को बैठाने के लिए कुर्सियों और गर्मी को देखते हुए पंखों की व्यवस्था की गई थी।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम बन गया मजाक....

सुक्खापुरवा प्राइमरी स्कूल के लिए बिजली बनी सपना

» स्कूल के समय कभी नहीं मिलती आपूर्ति

» छह महीने से बना हुआ बिजली संकट

» खंभे तो लगा दिए लेकिन तार बंधवाने के लिए बजट नहीं

स्वराज इंडिया संवाददाता

बिल्हौर। प्रदेश सरकार में बैठे अधिकारी बच्चों के प्रति कितने संवेदनशील है इसका अंदाजा खडेचा के सरकारी प्राथमिक स्कूल बिजली व्यवस्था को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। करीब छह महीने से यहां पर स्कूल के समय बिजली नहीं आ रही है। जिससे विद्यालय मिड डे मील व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। उमस भरी गर्मी के इस मौसम में बच्चे पंखे न चल पाने के कारण गर्मी से बिलबिला रहे हैं लेकर कोई सुनने वाला नहीं है।

जानकारी के मुताबिक अंग्रेजी माध्यम के सुक्खापुरवा प्राथमिक विद्यालय को घरेलू बिजली के खंभे दूर होने के चलते नलकूपों को मिलने वाली विद्युत आपूर्ति से कनेक्शन दिया गया था। समय बीतने के साथ बिजली विभाग ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों की पहल पर स्कूल को घरेलू बिजली देने के लिए खंभे लगवा दिए लेकिन जब खंभों में केबिल लगने की बारी आई तो बजट की कमी आड़े आ गई और बिजली आपूर्ति का मामला अधर में लटक गया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने छह महीने में कई बार जेई से बात की।

इस बीच दो जेई भी बदल गए। लेकिन स्कूल की समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ। अब आलम यह कि बारिश का मौसम चल रहा है। ऐसे में खेतों को पानी की कोई जरूरत नहीं है। इसलिए सिंचाई के काम में लगे नलकूपों को जब तब ही चलाया जा रहा है। इसके लिए कोई समय निर्धारित नहीं है।

आम तौर पर यह स्कूल के समय चलते ही नहीं हैं। जिसके कारण बिजली पर निर्भर स्कूल की पानी की टंकी तक नहीं भर पा रही है। मिड डे मील और बच्चों के पीने के लिए दूर दूर से पानी लाना पड़ रहा है। जो कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम की धज्जियां उड़ाता है। इसके बावजूद बिजली विभाग के अधिकारी कान में तेल डाले हुए हैं।

सुक्खापुरवा का इंग्लिश मीडियम प्राइमरी स्कूल।

नहीं सुन रहे बिजली विभाग के अधिकारी- प्रधानाध्यापक

इंग्लिश मीडियम स्कूल सुक्खापुरवा के प्रधानाध्यापक आलोक कुमार का कहना है कि उन्होंने बिजली व्यवस्था सुचारू से संचालित कराने के लिए काफी प्रयास किए। जिसके चलते खंभे लगवा दिए गए। उन्होंने बताया कि करीब 400 मीटर लंबी लाइन डाली जानी है। जिसके लिए ठेकेदार कह रहा है कि तार नहीं है। जब तार आयेगा तभी तार बिछ पाएगा।

सुक्खापुरवा स्कूल के लिए लगवाए गए ठूंठ बने खंभे कर रहे तारों का इंतजार।

20.59 करोड़ रुपये मूल्य की भूमि अवैध कब्जे से मुक्त

» पनकी गंगागंज इलाके में लिया गया एक्शन

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर। कानपुर विकास प्राधिकरण (केडीए) द्वारा अवैध कब्जों के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया गया।

केडीए के जोन-2 क्षेत्र अंतर्गत स्थित पनकी गंगागंज इलाके में लगभग 5,580 वर्ग मीटर भूमि, जिसकी बाजार कीमत लगभग 20 करोड़ 59 लाख 2 हजार रुपये आंकी गई है, को अवैध कब्जे से मुक्त कराया गया।

विशेष कार्याधिकारी/उप जिलाधिकारी डॉ. रवि प्रताप सिंह के नेतृत्व में की गई।

ध्वस्तीकरण कार्यवाही के दौरान क्षेत्रीय पुलिस बल की उपस्थिति में सहायक अभियंता सी.बी. पांडेय, अवर अभियंता कैलाश सिंह, भूमि बैंक के अमीन रामलाल एवं रमेश प्रजापति, तथा प्रवर्तन अनुभाग की टीम सक्रिय रही।

ग्राम का नाम	आराजी संख्या	
रकबा (वर्ग मीटर)	पनकी गंगागंज	
243	1020	अवैध कब्जे हटाकर निर्माण
ध्वस्त, पनकी गंगागंज	228	2560 -
3	पनकी गंगागंज	229
2000 पर कार्रवाई की गई।		

वहीं कब्जेदारों को सख्त चेतावनी दी गई है कि भविष्य में यदि दोबारा अतिक्रमण किया गया तो आईपीसी की सुसंगत धाराओं के तहत प्राथमिकी

दर्ज कर कानूनी कार्यवाही की जाएगी। साथ ही, आम जनता से अपील की गई है कि स्वेच्छा से अवैध निर्माण और अतिक्रमण हटा लें, अन्यथा प्राधिकरण स्वयं ध्वस्तीकरण करेगा और खर्च की वसूली भू-राजस्व बकाया की तरह की जाएगी।

प्राधिकरण ने यह भी स्पष्ट किया कि इस तरह की कार्यवाहियां आगे भी नियमित रूप

से चलती रहेंगी, ताकि अवैध कब्जों पर पूर्ण रूप से रोक लगाई जा सके।

सम्पादकीय

फिर भी भारत बेटों पर मोहित

देशकाल-परिस्थितियों और बदलती जरूरतों के अनुरूप वैश्विक स्तर पर एक सूक्ष्म, लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। यह बदलाव लिंग प्राथमिकताओं को लेकर वैश्विक दृष्टिकोण में आ रहे परिवर्तन का है। जैसा कि हाल ही में 'द इकनॉमिस्ट' द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि लड़कों के प्रति सदियों पुराना झुकाव अब कम हो रहा है। दुनियाभर में, अतिरिक्त पुरुष जन्म की संख्या- जो वर्ष 2000 में 1.7 मिलियन तक अधिक थी, साल 2025 तक लगभग दो लाख तक गिर गई है। निस्संदेह, यह प्रजनन विकल्पों में एक अप्रत्याशित बदलावों का संकेत है। यहां तक कि दक्षिण कोरिया और चीन में, लिंग अनुपात सामान्य या यहां तक कि बेटी की पसंद के संकेत दिखाने लगा है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि इस बदलाव की असल वजह क्या हैज दरअसल, माता-पिता में यह धारणा बलवती होती जा रही है कि बेटियां उनकी ढलती उम्र में धीरे-धीरे अधिक विश्वसनीय देखभाल करने वाली साबित हो सकती हैं। उन्हें परिवार से गहरे तक जुड़े रहने की अधिक संभावना के रूप में देखा जाने लगा है। आज बेटियों को बेटों के मुकाबले बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शनकर्ता के रूप में देखा जा सकता है। तेजी से कामकाजी दुनिया का हिस्सा बनने के कारण वह आर्थिक रूप से स्वावलंबी होती जा रही है। बल्कि कई देशों में तो महिलाओं की बैचलर डिग्री की संख्या तक पुरुषों की तुलना में अधिक है। पश्चिमी देशों में गोद लेने और आईवीएफ के डेटा दिखाते हैं कि बेटियों को चुनने की दिशा में स्पष्ट झुकाव है। दरअसल, पश्चिमी देशों के एकल परिवारों में बेटे अपनी गृहस्थी बसाकर मां-बाप को उनके भाग्य पर छोड़ जाते हैं। ऐसा माना जाने लगा है कि बेटियां बेटों के मुकाबले में ज्यादा संवेदनशील होती हैं और जीवन के अंतिम पड़ाव में मां-बाप को सुरक्षा कवच प्रदान कर सकती हैं। जिसके चलते लोग बेटों के मुकाबले बेटियों को अपनी प्राथमिकता बनाने को तरजीह देने लगे हैं। वहीं भारत में परिस्थितियां एक जटिल तसवीर प्रस्तुत करती हैं। यूं तो सदियों से भारत का समाज पुत्र मोह की ग्रंथि से ग्रस्त रहा है। हालांकि, अब आधिकारिक आंकड़े बता रहे हैं कि देश में शिशु लिंग अनुपात दर में सुधार हुआ है। लेकिन लिंग चयन के लिये किए जाने वाले गर्भपात पर शासन व प्रशासन की कानूनी सख्ती और जागरूकता अभियानों के बावजूद परंपरागत रूप से समाज में गहरी जड़ें जमाने वाला बेटा मोह अब भी प्राथमिकता बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5(2019-21) का सर्वे चिंता बढ़ाने वाला है। सर्वे के अनुसार, लगभग 15 फीसदी भारतीय माता-पिता अभी भी बेटियों की तुलना में बेटों की आकांक्षा रखते हैं। यही वजह है कि हरियाणा,पंजाब और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में विषम शिशु लिंगानुपात चिंता का विषय बना हुआ है।

इसके अलावा, भारत में बेटी वरीयता, जहां यह मौजूद है, अक्सर सशर्त होती है। लड़कियों को भावनात्मक लगाव या घरेलू स्थिरता के लिये तो महत्व दिया जा सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि पोषण, शिक्षा या विरासत तक उन्हें समान पहुंच दी जाए। भारतीय समाज में दहेज जैसी सांस्कृतिक प्रथाएं आज भी बेटी के माता-पिता की बड़ी चिंता बनी रहती हैं। परंपरावादी समाज में यह धारणा बलवती रही है कि बेटियां दूसरे परिवार की हैं। यही वजह है कि ग्रामीण और शहरी गरीब समुदायों में लड़कियां हाशिये पर रख जाती हैं। लेकिन इसके बावजूद भारत को लिंग समानता के वैश्विक आंदोलन की किसी भी तरह अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

वैश्विक संबंधों में बदलावों के कूटनीतिक सबक

ज्योति मल्होत्रा

बीते सप्ताह वैश्विक घटनाओं में तेजी से परिवर्तन आये। इनमें इस्राइल- ईरान संघर्ष तेज होने के अलावा कई अप्रत्याशित मोड़ थे। ट्रंप का जी-7 की बैठक छोड़ वापस लौटना व व्हाइट हाउस में पाकिस्तान के दो शीर्ष जनरलों को दिखाया गया लाड़। दरअसल, ईरान के साथ टकराव बढ़ने की स्थिति में अमेरिका पाकिस्तान को अग्रिम मोर्चे के संभावित मित्र राष्ट्र के रूप में देख रहा है। इन बदलावों में भारत के लिए कूटनीतिक सबक निहित हैं।विदेश नीति के बारे में यह कमाल है कि चंडीगढ़ के नित बदलते मौसम से भी अधिक तेजी से बदलती है और आपको पता नहीं होता कि आने वाले तूफान से कैसे निबटा जाए, जब तक कि वह ऐन आपके सिर के ऊपर न आ जाए। पिछले सप्ताह कनानास्किस में कुछ ऐसा ही हुआ। जहां पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए दिल्ली से साइप्रस होते हुए 11,056 किलोमीटर की यात्रा करके पहुंचे थे, दुनिया के कुछ सबसे शक्तिशाली लोग वहां एकत्र थे - सिवाय डोनाल्ड ट्रम्प के, जो जल्दी चले गए क्योंकि इस्राइल ने ईरान पर बमबारी कर दी थी और जैसा कि बाद में पता चला- पाकिस्तान के फील्ड मार्शल असीम मुनीर दोपहर के भोजन पर व्हाइट हाउस आने वाले थे।

यहां, इस सप्ताह वैश्विक मिज़ाज में आए परिवर्तनों से तीन सीखें मिलती हैं - सबसे पहले, महाभारत के अर्जुन की तरह, अपनी नज़र मछली की आंख पर बनाए रखें। साल 2019 में जोर-शोर से लगाए गए नारे, 'अबकी बार, ट्रम्प सरकार' वाले दिनों से लेकर ट्रम्प का मोदी को वाशिंगटन डीसी आने का बुलावा और मोदी द्वारा इसे ठुकराने वाली घड़ी तक, प्रधानमंत्री मोदी के लिए यह एक लंबी और संजीदा यात्रा रही। राजनीति का मुख्य सबक यह है कि राजनीति में न तो कोई स्थायी दोस्त होता है न ही दुश्मन, सिर्फ हित स्थाई होते हैं।घरेलू राजनीतिक मोर्चे पर प्रधानमंत्री इस खेल में माहिर हैं। वे विरोधाभासों का प्रबंधन बहुत खूबसूरती से कर लेते हैं, मसलन एक ओर दलित नेता बीआर अंबेडकर के लिए अपनी घोषित प्रशंसा और दूसरी ओर जाति जनगणना को लेकर उनकी पार्टी की बीते समय में असहजता - तथापि, कांग्रेस द्वारा इस मुद्दे के पीछे हाथ धोकर पड़ जाने के बाद, इस किस्म की जातिगणना करवाने की घोषणा कर देना। हो सकता है कि भाजपा इसका श्रेय छीन ले, खासकर तब जब कांग्रेस अंदरूनी तौर पर कमोबेश बिखरी पड़ी है। अपने पाले में, प्रधानमंत्री ने इस मामले में मतभेदों को जिस बढ़िया ढंग से संभाला है, विदेश मामलों के मोर्चे पर भी उन्हें अवश्य ऐसा ही कर दिखाना चाहिए। दूसरा,जिस बदलाव की बहुत जरूरत है वह है यथार्थवादी होने की काबिलियत। व्हाइट हाउस में पाकिस्तान के दो शीर्ष जनरलों - सेना प्रमुख असीम मुनीर और आईएसआई मुखिया जनरल असीम मलिक - को ट्रंप द्वारा दिखाया गया लाड़-प्यार इस बात का सबूत है कि ईरान के साथ टकराव बढ़ने की स्थिति में अमेरिका पाकिस्तान को अग्रिम मोर्चे के संभावित मित्र राष्ट्र के रूप में देख रहा है।अमेरिका सत्ता की प्रकृति को अच्छी तरह समझता है। पाकिस्तान के राजनीतिक नेतृत्व की अनदेखी करते हुए सीधे उसके सैन्य प्रतिष्ठान से राब्ता बनाकर ट्रंप यह स्पष्ट कर रहे हैं कि उनके पास औपचारिक रूट जैसे तामझाम लिए समय नहीं है। वह जानते हैं कि जो वो चाहते हैं, अगर कोई इसे पूरा सकता है, तो वह है रावलपिंडी स्थित सैन्य प्रतिष्ठान।तो क्या इसका यह मतलब है कि अमेरिका भारत की उस स्थिति पर और ज्यादा यकीन नहीं करना चाहता कि सीमा पार आतंकवाद का प्रायोजक पाकिस्तान है? या फिर अब यह नहीं मान रहा कि पहलगाम कांड पाकिस्तान में बैठे आतंकियों के आकाओं द्वारा करवाया गया था? इसका उत्तर हां और नहीं, दोनों है। निश्चित रूप से अमेरिका भारत के इस विश्लेषण से सहमत होगा कि भारत में सीमा पार से आतंकवाद का प्रायोजक पाकिस्तान है। लेकिन दुर्भाग्यवश, लगता है इस समय उसे पाक की ज़रूरत भारतीयों को पहुंचने वाले उस दर्द से ज्यादा महत्वपूर्ण लग रही है।

इंसान खुद लिख रहा है विनाश पटकथा

विनाश की लीला

गुरूपत शुक्ला

ऐसा प्रतीत होता है कि समृद्ध राष्ट्रों के लिए वैश्विक तनाव एक रणनीतिक आवश्यकता बन चुका है-अपनी सैन्य शक्ति के प्रदर्शन, हथियारों के व्यापार को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में वर्चस्व बनाए रखने के लिए। दशकों पुरानी शत्रुता के साथ शांति और अहिंसा की बातें केवल औपचारिक वक्तव्यों तक सीमित हैं। वास्तविकता यह है कि कहीं न कहीं युद्ध का बहाना ढूंढकर उसे भड़का दिया जाता है।इन शक्तिशाली देशों ने अपने ऐतिहासिक विकास की कीमत पर दो गंभीर समस्याएं-पर्यावरण प्रदूषण और वैश्विक ऊष्मीकरण-तीसरी दुनिया के कंधों पर डाल दी हैं। स्वयं आर्थिक रूप से सक्षम होने के बावजूद वे इन समस्याओं से निपटने के लिए न तो पर्याप्त आर्थिक संसाधन साझा करने को तैयार हैं, और न ही कोई वास्तविक उत्तरदायित्व लेने को। इसके विपरीत, वे भारत जैसे उभरते देशों को नेतृत्व का दायित्व सौंपते हैं, शायद इसलिए कि ये देश संसाधनों के अभाव में हमेशा उनकी मदद के मोहताज बने रहें और वैश्विक राजनीति में उनकी शर्तों पर खेलते रहें।

आज दुनिया को जिन वास्तविक युद्धों की आवश्यकता है-भुखमरी, महंगाई, भ्रष्टाचार और युवाओं के भविष्य की सुरक्षा के लिए-वो युद्ध कभी लड़े ही नहीं गए। इसके बजाय, शांतिप्रिय देशों पर आधुनिक हथियारों की वर्षा कर के, राष्ट्रों के भूगोल को युद्धभूमि बना दिया गया। आज जब रूस-यूक्रेन युद्ध एक तीन 'पुरानी त्रासदी' बन चुका है और चीन-ताइवान का टकराव स्थायी तनाव का चित्र बन गया है, तब दुनिया का ध्यान इस्राइल और ईरान के बीच उभरे नए संकट पर केंद्रित है। यह संघर्ष न केवल क्षेत्रीय अशांति का प्रतीक है, बल्कि इसके पीछे छिपी वैश्विक राजनीति की कई परतें भी उजागर करता है। निस्संदहे, इस्राइल को अपने पड़ोसी देशों और आतंकी संगठनों से लंबे समय से खतरे का सामना रहा है। लेकिन इस्राइल को पश्चिमी शक्तियों, विशेषकर अमेरिका का भरपूर समर्थन प्राप्त है-ऐसा समर्थन जो सिर्फ सैन्य या कूटनीतिक नहीं, बल्कि रणनीतिक नियंत्रण के इरादे से संचालित होता है। ईरान जब परमाणु शक्ति की ओर अग्रसर होता है, तो उसे परमाणु अप्रसार संधि का वास्ता देकर रोका जाता है, जबकि जिन देशों के पास पहले से परमाणु हथियार हैं, वे न केवल इस संधि से बाहर हैं, बल्कि अपनी परमाणु क्षमताएं और सैन्य दबदबा लगातार बढ़ा रहे हैं।

हाल ही में इस्राइल ने 'ऑपरेशन राइजिंग लायन' के तहत ईरान के लगभग सैन्य व परमाणु ठिकानों को निशाना बनाते हुए बड़ा हमला किया, जिसमें कई वरिष्ठ कमांडर, सेना प्रमुख और परमाणु वैज्ञानिक मारे गए। इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बयान दिया कि ईरान को किसी भी कीमत पर परमाणु शक्ति नहीं बनने दिया जाएगा, क्योंकि वह 'हमारे अस्तित्व के लिए खतरा' है। ईरान ने इसका कड़ा जवाब देने की चेतावनी दी है, जबकि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने इसे 'सिर्फ शुरुआत' करार देते हुए ईरान को परमाणु हथियार का सपना ?भूलने की धमकी दी है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या यह वास्तव में इस्राइल और ईरान का युद्ध है? या फिर यह उन वैश्विक शक्तियों की रणनीति का हिस्सा है जो नहीं चाहतीं कि मुस्लिम दुनिया कभी संगठित या परमाणु रूप से सशक्त हो? क्या यह संघर्ष वाकई आत्मरक्षा का है, या फिर शक्ति-राजनीति की एक सोची-समझी स्क्रिप्ट, जिसमें इस्राइल केवल एक मोहरा है और असली नियंत्रण अमेरिका जैसे देशों के हाथ में है? चाहे युद्ध कहीं भी हो और कोई भी पक्ष लड़ रहा हो, हार अंतत: मानवता की होती है। इसका सबसे बड़ा नुक़सान नई पीढ़ी को भुगतना पड़ता है, जिसकी किताबों में ज्ञान की जगह हथियारों की समझ भर दी जाती है।

सिर न झुकाया हुसैन ने (कर्बला की जंग)

इस्लाम जिंदा होता है हर कर्बला के बाद

हज़रत ईमाम हुसैन की शहादत

हज़रत इमाम हुसैन का रौज़ा (धर्मस्थल)।

तिथि 10 मोहर्रम 61 हि., 10 अक्टूबर 680 ईस्वी

स्थान कर्बला

(परिणाम-उमय्यद सेना विजय

हज़रत इमाम हुसैन इब्न अली और उनके परिवार और साथियों को शहीद कर दिया।

स्वराज इंडिया की खास रिपोर्ट

परिचय-करबला की लड़ाई मानव इतिहास कि एक बहुत ही जरूरी घटना है। यह सिर्फ़ एक लड़ाई ही नहीं बल्कि जीवन के सभी पहलुओं की मार्ग दर्शक भी है। इस लड़ाई की बुनियाद तो हज़रत मुहम्मद के देहान्त के बाद रखी जा चुकी थी। इमाम अली अ0 का ख़लीफ़ा बनना कुछ लोगो को पसंद नहीं था तो कई लड़ाईयाँ हुईं अली अ0 को शहीद कर दिया गया, तो उनके पश्चात हज़रत इमाम हसन इब्न अली अ0 खलीफा बने उनको भी शहीद कर दिया गया।

हज़रत हुर मूल रूप से इब्न ज़ियाद सेना के कमांडरों में से एक थे लेकिन 10 मुहर्रम 61 हि. 10 अक्टूबर, 680 ईस्वी पर अपने बेटे, नौकर और भाई के साथ हज़रत हुसैन के प्रति निष्ठा के चलते उन्होंने दल बदल लिया था

कर्बला का युद्ध या करबाला की लड़ाई, वर्तमान इराक़ में कर्बला शहर में इस्लामिक कैलेंडर 10 मुहर्रम 61 हिजरी (10 अक्टूबर, 680 ईस्वी) में हुई थी।[6] यह लड़ाई मुहम्मद के नवासे हज़रत इमाम हुसैन इब्न अली के समर्थकों और रिश्तेदारों के एक छोटे समूह के और उमय्यद शासक यज़ीद प्रथम की एक सैन्य टुकड़ी के बीच हुई थी। इस लड़ाई में मुहम्मद के नवासे हज़रत हुसैन रजी0 तथा उनके परिवार के पुरुष सदस्य व उनके साथी शहीद हो गए थे। उस समय का बना हुआ शासक यज़ीद माना जाता है कि हुकूमत में ग़ैर इस्लामिक काम किया करता था, इराक़ के शहर कूफ़ा के लोगों ने इमाम हुसैन को कई ख़त लिख कर कूफ़ा आने को कहा ताकि वो उनके हाथों में बै%अत कर के उन्हें अपना ख़लीफ़ा बनाएं लेकिन यज़ीद चाहता था कि हुसैन उसके साथ हो जाएं, वह जानता था अगर हुसैन उसके साथ आ गए तो सारा इस्लाम उसकी मुट्ठी में होगा। लाख दबाव के बाद भी इमाम हुसैन ने उसकी किसी भी बात को मानने से इनकार कर दिया, तो यज़ीद ने हुसैन को रोकने की योजना बनाई। चार मई, 680 ई. में इमाम हुसैन मदीने में अपना घर छोड़कर शहर मक्के पहुंचे, जहां उनका हज करने का इरादा था लेकिन उन्हें पता चला कि दुश्मन हाजियों के भेष में आकर उनका क़त्ल कर सकते हैं। हुसैन ये नहीं चाहते थे कि काबा जैसे पवित्र स्थान पर खून बहे, इसलिए इमाम हुसैन ने हज का इरादा बदल दिया और शहर कूफ़े की ओर चल दिए। रास्ते में दुश्मनों की फ़ौज उन्हें घेर कर कर्बला ले आई।

इमाम हुसैन ने कर्बला में अपने ख़ैमे (तम्बू) लगाए। यज़ीद अपने सरदारों के द्वारा लगातार इमाम हुसैन पर दबाव बनाता गया कि हुसैन उसकी बात मान लें, जब इमाम हुसैन ने यज़ीद की शर्तें नहीं मानी, तो दुश्मनों ने अंत में फ़रात नदी (जिससे थोड़ी ही दूरी पर इमाम हुसैन ने अपने ख़ैमे लगाए थे) पर फौज का पहरा लगा दिया और हुसैन के ख़ैमों में पानी जाने पर रोक लगा दी गई। यज़ीद की फ़ौज को देख कर कूफ़ा के लोग जिन्होंने इमाम हुसैन को बुलाया था अपना खलीफा बनाने के लिए उन्होंने भी उनका साथ छोड़ दिया।

तीन दिन गुज़र जाने के बाद जब इमाम के परिवार के बच्चे प्यास से तड़पने लगे तो हुसैन ने यज़ीदी फ़ौज से पानी मांगा तो दुश्मनों ने पानी देने से इंकार कर दिया। दुश्मनों ने सोचा इमाम हुसैन प्यास से टूट जाएंगे और हमारी सारी शर्तें मान लेंगे। जब हुसैन तीन दिन की प्यास के बाद भी यज़ीद की बात नहीं माने तो दुश्मनों ने हुसैन के ख़ैमों पर हमले शुरू कर दिए। इसके बाद इमाम हुसैन ने दुश्मनों से एक रात का समय मांगा और उस पूरी रात इमाम हुसैन और उनके परिवार ने अल्लाह की इबादत की और दुआ मांगते रहे कि मेरा परिवार, मेरे मित्र चाहे शहीद हो जाएँ, लेकिन अल्लाह का दीन इस्लाम, जो नाना मोहम्मद लेकर आए थे, वह बचा रहे।

10 अक्टूबर, 680 ई. को सुबह नमाज़ के समय से ही जंग छिड़, वैसे इमाम हुसैन के साथ केवल 175 या 180 मर्द थे, जिसमें 6 महीने से लेकर 13 साल तक के बच्चे भी शामिल थे। इस्लाम की बुनियाद बचाने में कर्बला में 162 लोग शहीद हो गए,

जिनमें दुश्मनों ने छह महीने के बच्चे अली असग़र (इमाम हुसैन के बेटे) के गले पर तीन नोक वाला तीर मारा, 13 साल के बच्चे हज़रत क़ासिम (इमाम हुसैन के भतीजे) को ज़िंदा रहते घोड़ों की टापों से रौंद डलवाया और सात साल आठ महीने के बच्चे औन-मोहम्मद (इमाम हुसैन के भांजे) के सिर पर तलवार से वार कर शहीद कर दिया

मोहर्रम जुलूस की तैयारियों का डीसीपी ने लिया जायज़ा

» बिल्हौर पुलिस को दिए सख्त निर्देश

» सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की गई

» सीसीटीवी ड्रोन से निगरानी, खुराफ़ातियों पर भी निगाह

स्वराज इंडिया संवाददाता

बिल्हौर (कानपुर)। आगामी मोहर्रम पर्व को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। इसी क्रम में गुरुवार को पुलिस उपायुक्त पश्चिम दिनेश त्रिपाठी ने थाना बिल्हौर क्षेत्र अंतर्गत कर्बला पहुंचकर मोहर्रम के जुलूस मार्ग की तैयारियों और सुरक्षा व्यवस्था का जायज़ा लिया।

निरीक्षण के दौरान डीसीपी ने संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि जुलूस मार्ग की निगरानी सीसीटीवी कैमरों और ड्रोन के माध्यम से की जाए ताकि किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधियों पर समय रहते कार्रवाई की जा सके।

निरीक्षण के उपरांत आयोजित गोष्ठी में डीसीपी ने कहा कि मोहर्रम के दौरान निकलने वाले सभी जुलूस शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण ढंग से सम्पन्न होने चाहिए। इसके लिए उन्होंने जुलूस आयोजकों से समन्वय बनाकर कार्य करने की अपील की।

थाना परिसर में आयोजित बैठक में श्री त्रिपाठी ने थानेदार व उप निरीक्षकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वारंटी, वांछित और इनामिया अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी सुनिश्चित की जाए। साथ ही महिलाओं से जुड़े अपराधों और लंबित विवेचनाओं का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर किया जाए। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि त्योहार के दौरान किसी भी प्रकार की अराजकता फैलाने वाले असामाजिक तत्वों की पहचान कर उनके विरुद्ध सख़्त कार्यवाही की जाए। यह सुनिश्चित किया जाए कि क्षेत्र में अमन-चैन की फिजा बनी रहे। इस मौके पर सहायक पुलिस आयुक्त बिल्हौर अमरनाथ, कोतवाल अशोक कुमार सरोज सहित अन्य पुलिस अधिकारी उपस्थित रहे।

ग्वालटोली मकबरे में इमाम हुसैन की याद में निकला जुलूस

ग्वालटोली मकबरे में इमाम हुसैन की याद में निकला जुलूस

स्वराज इंडिया संवाददाता

कानपुर। ग्वालटोली स्थित मकबरे में मंगलवार को इमाम हुसैन की शहादत की याद में जुलूस का आयोजन किया गया। इस मौके पर बड़ी संख्या में अकीदतमंदों ने शरीक होकर इमाम हुसैन की कुर्बानी को याद किया कार्यक्रम में वक्ताओं ने बताया कि इमाम हुसैन ने इंसानियत, सच्चाई और न्याय के लिए अपनी जान की कुर्बानी दी। उन्होंने अत्याचार और जुल्म के खिलाफ खड़े होकर पूरी दुनिया को यह संदेश दिया कि सच के रास्ते पर चलना मुश्किल जरूर है, लेकिन वही इंसानियत का असली रास्ता है जुलूस के दौरान मातम और नोहा खानी करते हुए लोगों ने कर्बला की घटना को याद किया। सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस प्रशासन भी मौके पर मौजूद रहा।

खानकाह मे परचम ए पंजतन पाक गुलजार किया

कानपुर। मोहर्रम की सात तारीख को हर साल की तरह इस साल भी खानकाहे हुसैनी हज़रत ख्वाजा सैय्यद दाता हसन सालार (रह0अलै0) की दरगाह कर्नलगंज, ऊँची सड़क में पंजतन पाक को केवड़ा इत्र गुलपोशी पेश कर सलातो सलाम दुआ के बाद लब्बैक लब्बैक या हुसैन हक हुसैन मौला हुसैन की सदाओं के साथ परचम ए पंजतन पाक गुलजार किया गया।पंजतन पाक की गुलपोशी के बाद खानकाहे हुसैनी के खादिम अफज़ाल अहमद चिश्ती परचम ए पंजतन पाक को खानकाह के बाहर लेकर आये इमाम हुसैन के अकीदतमंदों ने परचम ए पंजतन पाक पर गुलपोशी, इत्र, केवड़ा, पेशकर हक हुसैन, मौला हुसैन, नारे हैदरी ,या अली, या अली, लब्बैक,लब्बैक, या हुसैन, या हुसैन,के नारों की सदा बुलंद की सदाओं से खानकाह गूँज गयी।खादिम खानकाहे हुसैनी इखलाक अहमद डेविड चिश्ती ने कहा हिन्द के राजा मेरे ख्वाजा ने फ़रमाया शाह भी हुसैन है बादशाह भी हुसैन है दीन भी हुसैन है दीन को पनाह देने वाले भी हुसैन है सर दे दिया मगर नहीं दिया हाथ यज़ीद के हाथ में सच तो यह है ला इलाहा इल्लल्लाह की बुनियाद हुसैन है इमाम हुसैन ने दुनियां में मानवता, सदभाव, प्रेम, भाईचारा, अहिंसा, अन्याय व जुल्म के खिलाफ आवाज़ बुलंद करने का संदेश दिया।खानकाहे हुसैनी मे इखलाक अहमद डेविड चिश्ती, हाजी गौस रब्बानी, मोहम्मद आलम, मोहम्मद जावेद कादरी, मुज्ज़मिल हुसैन, अफज़ाल अहमद आदि लोग मौजूद थे।

पत्नी-बेटी पर हैवान बना पति, डेढ़ साल की बच्ची की पीट-पीटकर हत्या

» सीधामऊ गांव में शराब के नशे में पत्नी से मारपीट के दौरान साढू की मासूम बच्ची की गई जान

» घटना में पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल, आरोपी गिरफ्तार, हत्या में प्रयुक्त ऑटो जब्त

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। गजनेर थाना क्षेत्र के सीधा मऊ गांव में घरेलू विवाद ने खौफनाक रूप ले लिया जब एक पति ने शराब के नशे में पत्नी और बेटी पर हमला कर दिया। इस मारपीट में साढू की डेढ़ साल की मासूम बच्ची की मौत हो गई, जबकि पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गए।

पुलिस के अनुसार, यशोदा नगर, थाना नौबस्ता, कानपुर नगर निवासी अवध शुक्ला की शादी 9 साल पहले रेशमा पुत्री कर्मा पासवान से हुई थी।

दंपति का 6 साल का बेटा पुष्पेन्द्र और 3 साल की बेटी पुष्पा है। घरेलू कलह के चलते रेशमा करीब दो महीने पहले अपने साढू अनिल पासवान (निवासी सीधेमऊ) के घर आकर रहने लगी थी।सोमवार रात अवध शुक्ला अपनी पत्नी को लेने साढू के घर पहुंचा और वहां दोनों के बीच जमकर विवाद हुआ। आरोप है कि नशे में धुत अवध ने न सिर्फ अपनी पत्नी और बेटी को पीटा, बल्कि साढू की डेढ़ साल की बेटी आरोही को भी नहीं बख्शा, जिसकी मौके पर ही मौत हो गई।घटना की सूचना मिलते ही गजनेर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, अकबरपुर भेजा, जहां से दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। दोनों के सिर में गंभीर चोटें हैं।

सीओ संजय वर्मा ने बताया कि मृत बच्ची के परिजनों की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। आरोपी अवध शुक्ला को हिरासत में लेकर उसकी ऑटो भी जब्त कर ली गई है। घायलों का इलाज जारी है, मामले की जांच कर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

जल भराव से रुकी पढ़ाई, भजनपुर के बच्चे स्कूल से दूर

» स्कूल जाने वाला रास्ता बना दलदल, नाली का पानी बह रहा खुले में

» शिकायतों के बावजूद अफसर मौन, बच्चों का भविष्य अधर में

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात जनपद के मलासा ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम पंचायत मोहम्मदपुर के माजरा भजनपुर गांव में प्राथमिक विद्यालय तक जाने वाला रास्ता अब जानलेवा दलदल में बदल चुका है। गांव की खुली नालियों का गंदा पानी स्कूल के रास्ते से बह रहा है, जिससे छोटे-छोटे छात्र गंदगी और बदबू के बीच स्कूल जाने को मजबूर हैं। कई बच्चों ने स्कूल आना ही छोड़ दिया है।

स्थानीय निवासी और गांव के एक फौजी गोरे फौजी ने बताया कि यह वही रास्ता है जिससे वह भी अपने घर आते हैं, लेकिन दबंगों द्वारा रास्ते पर कब्जा कर लिया गया है। साथ ही रास्ता पूरी तरह से जलभराव की चपेट में है, जिसकी शिकायतें कई बार की जा चुकी हैं, मगर न तो कोई निर्माण हुआ और न ही कोई स्थायी समाधान मिला।

गांव के छात्रों और ग्रामीणों ने बताया कि उन्होंने विद्यालय प्रशासन और शिक्षकों को भी इस समस्या से अवगत कराया, मगर कुछ नहीं बदला। इस दलदल भरे रास्ते से न केवल बच्चे, बल्कि गांव के लोग धार्मिक स्थल और खेत तक भी इसी रास्ते से जाने को मजबूर हैं।

क्या बोले जिम्मेदार अधिकारी?

भोगनीपुर की एसडीएम प्रिया सिंह ने बताया कि उन्हें मामले की जानकारी है और उन्होंने स्वयं गांव का निरीक्षण किया है। जल्द ही रास्ते का निर्माण कार्य शुरू कराया जाएगा। वहीं मलासा बीडीओ संजू सिंह से संपर्क की कोशिश की गई, मगर उन्होंने कॉल रिसीव नहीं की।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक सपना देवी द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। संपादक: अनूप कुमार RNI No.: UPHIN/2023/86769 | Email: swarajindia2023@gmail.com | Mob: 7800009853, | Website: www.swarajindianews.com | (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे)

छह महीने में ढह गईं आरआरसी की दीवारें, अब जांच के घेरे में जिम्मेदार

» स्वराज इंडिया की खबर का असर, टोडरपुर आरआरसी केंद्र की गुणवत्ता पर उठे सवाल

» टोडरपुर पंचायत में लाखों की लागत से बना केंद्र बना भ्रष्टाचार की नजीर, प्रशासन ने लिया संज्ञान

स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

कानपुर देहात। मलासा विकासखंड की ग्राम पंचायत टोडरपुर में लाखों रुपये की लागत से बने एकीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र (आरआरसी) की जर्जर स्थिति को लेकर स्वराज इंडिया न्यूज में प्रकाशित खबर का बड़ा असर हुआ है। अब तक अनदेखी कर रहे प्रशासन की नींद टूटी है और मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

महज छह महीने में आरआरसी केंद्र की दीवारों का टूट जाना निर्माण कार्य में गंभीर अनियमितताओं की ओर इशारा कर रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि निर्माण के दौरान ही सामग्री की गुणवत्ता पर सवाल उठे थे, लेकिन किसी ने कोई कार्रवाई नहीं की। अब जब पूरा ढांचा कमजोर हो चुका है और दीवारें गिरने लगी हैं, तब प्रशासन हरकत में आया है।

स्थानीय नागरिकों और मंदिरों के पुजारियों ने बताया कि केंद्र के संचालन के अभाव में गांव का कचरा शिव मंदिर, दुर्गा मंदिर और सार्वजनिक स्थलों के पास फेंका जा रहा है। इससे न सिर्फ आस्था के स्थानों का अपमान हो रहा है, बल्कि पूरे गांव में गंदगी फैल रही है। नालियां जाम हो चुकी हैं और मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है।

खास बात यह है कि संबंधित एडीओ पंचायत के पास ब्लॉक सचिव का अतिरिक्त चार्ज भी है, बावजूद इसके निर्माण की निगरानी और संचालन दोनों ही नजरअंदाज किए गए।

डीएम द्वारा आरआरसी केंद्रों के संचालन के सख्त निर्देश जारी किए गए थे, पर जमीनी स्तर पर स्थिति इससे उलट है।ग्रामीणों की शिकायतों और मीडिया रिपोर्ट के बाद प्रशासन ने अब मामले को गंभीरता से लिया है और जांच के आदेश दे दिए हैं।

डीपीआरओ विकास पटेल का बयान

स्वराज इंडिया न्यूज द्वारा उठाए गए मामले को संज्ञान में लिया गया है। निर्माण कार्य की गुणवत्ता की जांच कराई जा रही है। जो भी दोषी पाया जाएगा, उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

अधूरा पड़ा आर आर सी सेंटर टूटीं दीवारें खोल रहीं भ्रष्टाचार की पोल

कमजोर निर्माण कार्य के कारण छः महीने में ही टूट गई दीवारें

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। गांवों को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए सरकार द्वारा लाखों रुपये खर्च कर बनाए जा रहे एकीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र (आर आर सी) कागजों में तो बेहतर दिखाए जा रहे हैं, लेकिन ज़मीनी हकीकत कुछ और ही है। मलासा विकासखंड की ग्राम पंचायत टोडरपुर में बना RRC भवन महज छह महीने में ही दरकने लगा है। कूड़ा संग्रहण वाली दीवारें टूट चुकी हैं और केंद्र की पूरी इमारत जर्जर होती जा रही है। यह न सिर्फ निर्माण की घटिया गुणवत्ता का प्रमाण है, बल्कि इसमें हुए भ्रष्टाचार की ओर भी इशारा करता है।

इतना सब होने के बावजूद ग्राम पंचायत और पंचायत विभाग के जिम्मेदार अधिकारी चुप्पी साधे बैठे हैं। संबंधित एडीओ पंचायत के पास ब्लॉक सचिव का भी चार्ज है, इसके बावजूद हालात सुधरने की जगह और बिगड़ते जा रहे हैं। डीएम द्वारा सभी ग्राम पंचायतों में RRC संचालन के सख्त निर्देश दिए जा चुके हैं, फिर भी न तो केंद्रों का संचालन हो रहा है और न ही निर्माण की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जा रहा है।

RRC केंद्रों के संचालन न होने से गांव में कचरा शिव मंदिर, दुर्गा मंदिर और सड़कों के किनारे डाला जा रहा है। नालियों में कचरा भरने से गंदगी फैली हुई है और स्वच्छता अभियान की पोल खुल रही है। लाखों की लागत से बने ये केंद्र फिलहाल सफेद हाथी बनकर रह गए हैं और जिम्मेदारों की उदासीनता साफ दिखाई दे रही है।

चोर-लुटेरों का पुलिस को चैलेंज, नहीं थम रहीं वारदातें

» अमरौधा मोड़ पर बाइक सवार बदमाशों ने व्यापारी को बनाया निशाना,आंख में मिर्च झोंक कर छीना बैग

» घायल व्यापारी मेडिकल कॉलेज रेफर, बैग में था नकद, सोना-चांदी समेत 6 से 7 लाख का सामान

» पहले भी व्यापारी के घर पड़ी थी डकैती, अब दोबारा निशाना बनाकर खड़े किए सुरक्षा पर सवाल

स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

कानपुर देहात। भोगनीपुर कोतवाली क्षेत्र के अमरौधा कस्बे के पास बुधवार शाम एक सनसनीखेज वारदात में बाइक सवार दो बदमाशों ने सर्राफा व्यापारी सोमनाथ गुप्ता पर जानलेवा हमला कर लाखों की लूट को अंजाम दिया। पुखरायां में सर्राफा दुकान चलाने वाले सोमनाथ जब बारिश के बाद देर शाम दुकान बंद कर अपने घर लौट रहे थे, तभी अमरौधा मोड़ के पास पीछे से आए लुटेरों ने उनके सिर पर भारी वस्तु से वार किया और आंखों में मिर्च पाउडर डालकर उनका बैग लूटकर फरार हो गए।

घायल व्यापारी को राहगीरों ने उठाया और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंचे क्षेत्राधिकारी भोगनीपुर संजय सिंह और पुलिस बल ने उन्हें पुखरायां सीएचसी में भर्ती कराया, जहां से गंभीर हालत में मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। पुलिस अधीक्षक अरविंद मिश्रा और अपर एसपी राजेश पांडेय ने मौके पर पहुंचकर घटना की जांच की और जल्द खुलासे के निर्देश दिए।

पीड़ित के मुताबिक, बैग में 30 हजार नकद, 2 किलो चांदी और लगभग 50 ग्राम सोना था।

कुल मिलाकर लुटेरे करीब 6-7 लाख रुपये का माल लूट ले गए। चौंकाने वाली बात यह है कि सोमनाथ गुप्ता के घर 1995 में भी डकैती हुई थी, जिसमें उनके पिता और बुआ की हत्या कर दी गई थी।

पहले व्यापारी के घर से उड़ाए थे 50 लाख के जेवर-नकदी

पुखरायां कस्बे के पटेल चौक निवासी व्यापारी नितेश ओमर के घर बीती 26 जून की रात अज्ञात चोरों ने ताला तोड़कर लगभग 50 लाख रुपये की चोरी को अंजाम दिया था। नितेश अपने परिवार के साथ कानपुर किसी रिश्तेदार की तबीयत के चलते गए हुए थे।

सुबह जब वे लौटे तो घर का मुख्य गेट टूटा मिला और सीसी टीवी कैमरों की लाइटें जली थीं। पूरे घर का सामान बिखरा पड़ा था।

चोर घर में रखे नकद और जेवरात लेकर फरार हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने इष्टअङ्क फुटेज में दो संदिग्धों को देखा जो रात 12 बजे के करीब घर में घुसे थे। पुलिस अभी तक किसी आरोपी तक नहीं पहुंच पाई है।

गन हाउस का शटर तोड़कर ले गए हथियार और कारतूस

रनियां थाना क्षेत्र में एक बड़ी वारदात में चोरों ने गन हाउस का शटर तोड़कर दुकान से चार बंदूकें (दो डबल बैरल, दो सिंगल बैरल), 75 कारतूस और एक रिवॉल्वर चोरी कर ली थी। घटना से क्षेत्र में हड़कंप मच गया था। पुलिस अब तक इन चोरों को पकड़ने में भी नाकाम रही है।

लगातार हो रही इन आपराधिक घटनाओं से व्यापारी और आमजन में भय का माहौल है और जिले की कानून व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं।

फ़र्ज़ी वेरिफिकेशन, असली पद
सरकारी नौकरी या मज़ाक का मंच?

» धारा 420 के बाद भी सरकारी सेवा! यूपी सचिवालय में कौन दिला रहा संरक्षण?

» जिसे कानून ने पकड़ लिया, सिस्टम ने उसे अफसर बना दिया!

» टीईटी घोटाले से सचिवालय की कुर्सी तक चुपचाप चढ़ा धोखेबाज़!

स्वराज इंडिया संवाददाता

अयोध्या। जब सिस्टम ही सवालों के कटघरे में हो, तो न्याय की उम्मीद किससे करें? यूपी सचिवालय के एमएसएमई विभाग में समीक्षा अधिकारी के पद पर बैठे अयोध्या निवासी मूलचंद गुप्ता पर लगे आरोप न सिर्फ प्रशासनिक शुचिता पर सवाल खड़े करते हैं, बल्कि यह भी उजागर करते हैं कि सरकारी नौकरी में दाखिल होने की दरारें कितनी गहरी और खतरनाक हो चुकी हैं। यह आरोप अयोध्या निवासी गौरव कसौधन ने एक प्रेस वार्ता में लगाया है।

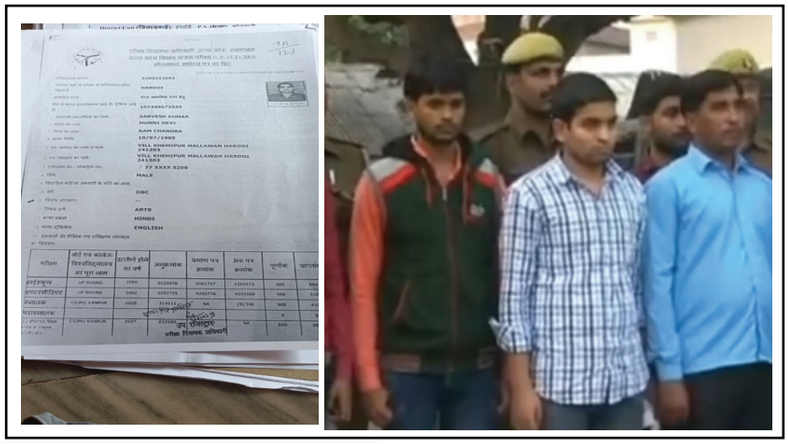

अयोध्या निवासी शिकायतकर्ता गौरव कसौधन ने बताया कि उन्होंने इसके सम्बन्ध में मुख्य सचिव को पत्र भेजकर आरोप लगाया है कि मूलचंद गुप्त ने 2018 के टीईटी परीक्षा घोटाले में सॉल्वर गैंग के सदस्य के रूप में हरदोई पुलिस द्वारा गिरफ्तार होकर जेल की हवा खाई,

और आज वही व्यक्ति राज्य सचिवालय में समीक्षा अधिकारी की कुर्सी पर बैठा है। उस पर 119, 420, 467, 468, 120बी आईपीसी मुकदमा विचाराधीन है।

अब सवाल यह है

क्या शासन सख्ती दिखाएगा या फिर एक और दाग, फाइलों के नीचे दब जाएगा? कानून से ऊपर कौन? इस सवाल की गूंज अब सिर्फ सचिवालय की दीवारों तक सीमित नहीं रहेगी।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि पुलिस वेरिफिकेशन, न्यायालयीन विचाराधीन मामला, और अपराधिक इतिहास जैसे तथ्यों को नौकरी आवेदन के समय कैसे छिपाया गया?

क्या सरकारी नौकरी अब साफ-सुथरे रिकॉर्ड की नहीं, बल्कि चालाकी और जालसाजी की पात्रता बन चुकी है? समीक्षा अधिकारी गुप्ता ने जवाब में कहा यह व्यक्तिगत मामला है।

लेकिन कानून के जानकारों का कहना है कि यह न सिर्फ नियमों का उल्लंघन है, बल्कि फर्जीवाड़ा कर सरकार को गुमराह करने का संगीन अपराध भी।

रामपथ निर्माण में तकनीकी खामियाँ उजागर

पीडब्ल्यूडी ने नगर निगम पर डाली जिम्मेदारी

स्वराज इंडिया संवाददाता

अयोध्या। अयोध्या में रामपथ निर्माण को लेकर तकनीकी खामियाँ सामने आने के बाद विभागों के बीच जवाबदेही को लेकर ठीकरा एक-दूसरे पर फोड़ा जा रहा है। सामाजिक कार्यकर्ता अभिषेक सावंत द्वारा 27 मई 2025 को लोक निर्माण विभाग उत्तर प्रदेश शासन को भेजी गई शिकायत में जल निकासी, सीवर ढक्कनों की स्थिति, सफाई और सार्वजनिक सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठाए गए थे।

शिकायत में आरोप लगाया गया कि रामपथ पर जल निकासी की कोई समुचित योजना नहीं है। डिवाइडर में जलभराव हो रहा है, स्लोप और आउटलेट की व्यवस्था नहीं है। इसके अलावा सीवर ढक्कन खुले और असुरक्षित हैं, जिससे हादसे की आशंका बनी रहती है।

पूरे मार्ग पर गंदगी, कीचड़ और मच्छरों का जमाव है जिससे श्रद्धालुओं और आम नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। पीडब्लूडी ने अपने जवाब में कहा है कि सड़क निर्माण मुख्य सचिव स्तर पर निर्देशित हुआ था और निर्माण गुणवत्ता के अनुसार

पूरा किया गया है। विभाग ने दावा किया कि ड्रेनेज और स्लोप की व्यवस्था की गई है।

साथ ही, जलभराव की समस्या को नगर निगम की सफाई व्यवस्था से जोड़ते हुए जिम्मेदारी नगर निगम पर डाल दी गई है। विभाग ने पत्र संख्या 1243/सी और 1366/IGRS/25 के माध्यम से नगर निगम को इस संबंध में कार्रवाई के लिए लिखा है।

सीवर ढक्कनों के संबंध में पीडब्ल्यूडी ने उन्हें सुरक्षित बताया है और कहा कि केवल मामूली स्तर पर अंतर हो सकता है। विभाग ने यह भी बताया कि सफाई के लिए मशीनें लगाई गई हैं और डिवाइडर में कभी-कभी कूड़ा चला जाता है।

वहीं, अभिषेक सावंत ने विभाग के जवाब को असंतोषजनक बताते हुए कहा कि यह जिम्मेदारी से बचने की कोशिश है। उन्होंने कहा कि जिस विभाग ने करोड़ों की लागत से सड़क का निर्माण कराया, वही अब जलभराव और गंदगी की जिम्मेदारी नगर निगम पर डाल रहा है। यह दर्शाता है कि निर्माण के दौरान डिज़ाइन, समन्वय और निगरानी में गंभीर लापरवाही बरती गई।

स्कूल मर्जर आदेश पर हाईकोर्ट में आज सुनवाई

» याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता ने दलील दी है कि योगी सरकार का यह निर्णय राइट टू एजुकेशन एक्ट का उल्लंघन है

» सरकार का कहना है कि सभी स्टूडेंट को बेहतर और सुविधापूर्वक शिक्षा देने के लिए ये कदम उठाया जा रहा

प्रमुख संवाददाता स्वराज इंडिया

लखनऊ/कानपुर। उत्तर प्रदेश में प्राथमिक स्कूलों के विलय को लेकर दाखिल याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच में गुरुवार को सुनवाई हुई। मामले की सुनवाई जस्टिस पंकज भाटिया की एकलपीठ में हुई। समय की कमी के कारण सुनवाई पूरी नहीं हो पाई। कल यानी शुक्रवार को फिर से सुनवाई होगी।

राज्य सरकार अपना पक्ष रखेगी। न्यायालय ने कहा और अतिरिक्त समय नहीं दिया जाएगा। संभावना है आज सुनवाई पूरी हो जाएगी। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता गौरव मेहरोत्रा ने दलील दी। उन्होंने कहा कि सरकार का यह निर्णय राइट टू एजुकेशन एक्ट का उल्लंघन है।

इससे बच्चों और शिक्षकों दोनों का भविष्य प्रभावित होगा। आपस में विलय होने के कारण स्कूल बच्चों के घर से दूर हो जाएंगे। उनको वहां तक पहुंचना कठिन होगा, क्योंकि गांवों में जाने के लिए साधन नहीं होता है। घर का सदस्य इतना सक्षम नहीं होता है कि वो बच्चों को रोज 2-3 किलोमीटर ले जाकर स्कूल छोड़ सके।

इस कारण ऐसे बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ेगा जिनके घर से स्कूल की दूरी बढ़ जाएगी। वहीं राज्य सरकार की ओर से एएजी अनुज कुदेशिया ने बहस की।

उन्होंने कहा कि 58 ऐसे स्कूल हैं जिसमें एक भी छात्र नहीं हैं। राज्य सरकार का कहना है कि कोई भी स्कूल बंद नहीं किया जाएगा। उनका उपयोग अन्य सरकारी कार्य में किया जाएगा।

सरकार का कहना है कि सभी स्टूडेंट को बेहतर और सुविधापूर्वक शिक्षा देने के लिए ये कदम उठाया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एनसीएफ) -2020 के तहत स्कूलों के बीच सहयोग, समन्वय और संसाधनों के साझा उपयोग को बढ़ावा देना जरूरी है। जिससे हर स्टूडेंट को सुविधा के साथ बेहतर शिक्षा मिल सके।

सरकार की क्या है तैयारी-

हर जिले में एक मुख्यमंत्री अभ्युदय कंपोजिट विद्यालय (कक्षा 1 से 8 तक) खोला जा रहा है। प्रदेश सरकार की ओर से इन स्कूलों को आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और शैक्षणिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। हर स्कूल में कम से कम 450 स्टूडेंट के लिए संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। स्कूल बिल्डिंग को 1.42 करोड़ की लागत से अपग्रेड भी किया जा रहा। स्कूलों में स्मार्ट क्लास, टॉयलेट, फर्नीचर, पुस्तकालय, कंप्यूटर रूम, मिडडे मील किचन, डायनिंग हॉल, सीसीटीवी, वाई-फाई, ओपन जिम और शुद्ध पेयजल की व्यवस्था की जाएगी। इसी तरह सरकार की ओर से हर जिले में एक मुख्यमंत्री मॉडल कंपोजिट स्कूल (कक्षा 1 से 12 तक) की स्थापना की जा रही है। इस पर करीब 30 करोड़ रुपए की लागत आएगी।

इन स्कूलों में कम से कम 1500 छात्रों के लिए स्मार्ट क्लास, एडवांस साइंस लैब, डिजिटल लाइब्रेरी, खेल मैदान, कौशल विकास सुविधाओं की स्थापना की जाएगी। कक्षा 11-12 के लिए विज्ञान, वाणिज्य और कला संकाय की अलग-अलग कक्षाओं का भी प्रावधान किया जाएगा।

28 हजार स्कूल पहले ही हो चुके हैं मर्ज-

साल 2017-18 में बेसिक शिक्षा परिषद के 1.58 लाख से अधिक स्कूल थे। इनमें 1 लाख 13 हजार 289 प्राइमरी स्कूल थे। कंपोजिट विद्यालयों के गठन के लिए कम छात्र संख्या वाले करीब 28 हजार स्कूलों को पड़ोस के स्कूल में मर्ज किया गया था। इससे 28 हजार प्रधानाध्यापक के पद सीधे-सीधे कम हो गए। वहीं छात्र-शिक्षक अनुपात के लिहाज से हजारों टीचर भी सरप्लस हो गए।

70 फीसदी हेड मास्टर के पद खाली-

परिषदीय स्कूलों में करीब एक दशक से प्रधानाध्यापक के पद पर पदोन्नति नहीं हुई है। 70 फीसदी से ज्यादा स्कूलों में कार्यवाहक हेडमास्टर हैं। कार्यवाहक हेडमास्टरों को कोई अतिरिक्त भत्ता नहीं दिया जाता।

42 लाख छात्र भी कम हो गए छात्र-

बेसिक शिक्षा परिषद के स्कूलों में 2017-18 में करीब 1.37 करोड़ स्टूडेंट थे। योगी सरकार की ओर से हर साल स्कूल चलो अभियान चलाकर नामांकन संख्या बढ़ाई गई। कोरोना महामारी के दौरान जब ग्रामीणों के पास प्राइवेट स्कूलों में फीस जमा करने के लिए पैसे नहीं थे तो उन्होंने भी अपने बच्चों का सरकारी स्कूलों में दाखिला कराया।

2021-22 में स्टूडेंट की संख्या 1.91 करोड़ तक पहुंच गई थी लेकिन बीते 3 साल में लगातार ये संख्या घटती चली गई। आलम यह है कि अब ये संख्या 1.49 करोड़ रह गई है। जानकार मानते हैं कि करीब 28 हजार प्राथमिक स्कूलों को कंपोजिट स्कूल में तब्दील करने से भी छात्रों की संख्या कम हुई है। महकमे के अधिकारी कहते हैं कि शिक्षकों की ओर से नामांकन बढ़ाने और शिक्षा की गुणवत्ता सुधार में दिलचस्पी नहीं ली जाती है। इस वजह से बच्चे स्कूल छोड़कर चले जाते हैं जबकि सरकार हर संभव सहायता और सभी सुविधाएं दे रही है। इस प्रकार सरकार उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत को चरितार्थ कर रही है।

पत्रकार संदीप शर्मा बने मंडल मीडिया प्रभारी

» कमालगंज निवासी संदीप शर्मा उर्फ बाबा हनुमान दास को जय जवान जय किसान लोक शक्ति संगठन ने सौंपी अहम जिम्मेदारी

स्वराज इंडिया न्यूज़ ब्यूरो

फर्रूखाबाद। कमालगंज कस्बे के निवासी वरिष्ठ पत्रकार संदीप शर्मा उर्फ बाबा हनुमान दास को जय जवान जय किसान लोक शक्ति संगठन (किसान यूनियन) का मंडल मीडिया प्रभारी नियुक्त किया गया है। संगठन ने उनकी सक्रिय पत्रकारिता, सामाजिक योगदान और जनसरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता को देखते हुए यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है ।पदभार ग्रहण की खुशी में संदीप शर्मा ने सबसे पहले एक पौधा लगाकर अपने नए दायित्व की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि वह हमेशा सत्य के मार्ग पर अडिग रहेंगे और संगठन के हितों की रक्षा के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे। उन्होंने अपने सभी साथियों से मार्गदर्शन व सहयोग की अपील करते हुए कहा कि संगठन और समाज के लिए सकारात्मक भूमिका निभाना ही उनका लक्ष्य रहेगा ।इस दौरान उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि यदि उनके किसी शब्द या कार्य से किसी को भी ठेस पहुंची हो तो वे हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं। संदीप शर्मा उर्फ बाबा हनुमान दास ने पत्रकारिता के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता के क्षेत्रों में भी सक्रिय भूमिका निभाने का संकल्प लिया है।

तीन दिवसीय आम महोत्सव

सीएम योगी ने आम महोत्सव 2025 का किया शुभारंभ

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखनऊ। लखनऊ के अवध शिल्प ग्राम में तीन दिवसीय आम महोत्सव का शुभारंभ आज से हो गया है। शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महोत्सव का शुभारंभ किया। इस महोत्सव में आम की 800 प्रजातियों को देखने और चखने का अवसर लोगों को मिलेगा। इस मौके पर सीएम योगी ने हरी झंडी दिखाकर आम के कंटेनर लंदन और दुबई के लिए रवाना किए।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विजन के अनुरूप हमारा किसान आज कृषि की उन्नत तकनीकों को अपना कर लाभ कमा रहा है। आम महोत्सव सिर्फ महोत्सव नहीं है। यह तकनीक के विकास का माध्यम बन रहा है। डबल इंजन की सरकार ने चार पैक हाउस बनाए हैं। इससे निर्यात बढ़ रहा है। औद्यानिक फसलों से जुड़े बागवान को एक्सपोर्ट के लिए प्रशिक्षित करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश का आम विदेश भेजा जा रहा है। भविष्य में इसकी संख्या बढ़ाई जाएगी।

सख्ती : फरीदकोट से डीएसपी राजनपाल को किया गिरफ्तार

एसएसपी के रीडर को 1 लाख रिश्वत देने और एक पीड़ित परिवार से 1 लाख घूस लेने का आरोप

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

पंजाब। पंजाब में भ्रष्टाचार के खिलाफ एक्शन जारी है। इस बीच फरीदकोट से पुलिस ने डीएसपी राजनपाल को गिरफ्तार किया है। बता दें कि राजनपाल पर एसएसपी के रीडर को 1 लाख रुपये रिश्वत देने का और एक पीड़ित परिवार से 1 लाख रुपये घूस लेने का आरोप है।

पंजाब के फरीदकोट पुलिस ने डीएसपी (क्राइम अगेंस्ट वूमेन) राजनपाल के खिलाफ केस दर्ज करते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। दरअसल पुलिस ने डीएसपी राजनपाल को वैवाहिक विवाद की शिकायत में एक पीड़ित परिवार से एक लाख रुपये रिश्वत वसूलने और खुद की शिकायत होने पर एसएसपी के रीडर को एक लाख रुपये रिश्वत देने की कोशिश करने के मामले में गिरफ्तार किया है। बता दें कि डीएसपी राजनपाल फरीदकोट जिले के गांव पक्का की रहने वाली एक विवाहिता किरणजीत कौर की शिकायत की जांच इस मामले की जांच कर रहे थे। इस मामले में राजनपाल पर आरोप है कि उन्होंने पीड़िता के परिवार से एक लाख रुपये की रिश्वत ली, बावजूद उनके वैवाहिक विवाद का हल नहीं करवाया।

- पंजाब में भ्रष्टाचार के खिलाफ लगातार जारी है एक्शन
- पीड़ित परिवार से रिश्वत लेने के बाद विवाद का हल नहीं करवाया
- पीड़िता के भाई ने इस घटना की शिकायत एसएसपी के पास की
- शिकायत की भनक लगते ही रीडर एएसआई को एक लाख रिश्वत देने का प्रयास किया

डीएसपी राजनपाल को किया गया गिरफ्तार : इसके बाद विवाहिता किरणजीत कौर के भाई कर्मतेज सिंह ने इस घटना की शिकायत एसएसपी के पास की। कर्मतेज सिंह ने एसएसपी को बताया कि डीएसपी राजनपाल ने उनसे एक लाख रुपये की रिश्वत ली है। डीएसपी राजनपाल को जैसे ही इसकी भनक लगी कि उनके खिलाफ एसएसपी के पास शिकायत की गई है तो राजनपाल ने एसएसपी डॉ. प्रज्ञा जैन के रीडर एएसआई जसविंदर सिंह से संपर्क साधा। इसके बाद राजनपाल ने रीडर एएसआई को एक लाख रुपये रिश्वत देने का प्रयास किया, बदले में राजनपाल अपने खिलाफ हुई शिकायत को रफा-दफा करवाना चाहता था।

एसएसपी के आदेश के बाद लिया गया एक्शन : राजनपाल द्वारा रीडर को रिश्वत देने का प्रयास किए जाने की शिकायत रीडर ने तुरंत एसएसपी से की। इसके बाद एसएसपी ने इस मामले में संज्ञान लेते हुए राजनपाल के खिलाफ केस दर्ज करने का आदेश दिया।

इसी मामले में अब डीएसपी राजनपाल के खिलाफसिटी में भ्रष्टाचार रोकों एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया गया है और उन्हें गिरफ्तार भी कर लिया गया है।

खुलासा

भारतीय सेना के उप-सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने किया खुलासा

पाक को भारत की तैयारियों का लाइव डाटा लीक कर रहा था चीन

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली। भारतीय सेना के उप सेना प्रमुख (क्षमता विकास एवं संधारण) लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन-पाकिस्तान और तुर्किए के गठबंधन को बेनकाब किया है। उन्होंने कहा कि इस अभियान में हमने एक सीमा पर जंग लड़ते हुए तीन विरोधियों को शिकस्त दी। उन्होंने कहा कि इस अभियान के जरिए देश के शीर्ष नेतृत्व ने भी पड़ोसी समेत सभी को साफ रणनीतिक संदेश दिया कि अब पहले की तरह आतंकवादी कृत्यों को सहन नहीं किया जाएगा।

भारतीय सेना के उप सेना प्रमुख (क्षमता विकास एवं संधारण) लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने दावा किया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन पाकिस्तान को भारत की तैयारियों और अग्रिम मोर्चों पर हमारी तैनाती को लेकर इनपुट दे रहा था।

आबादी वाले क्षेत्रों में एयर डिफेंस करना होगा मजबूत

उन्होंने एक मजबूत वायु रक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि भविष्य में अगर पाकिस्तान हम पर हमला करता है तो वह आबादी वाले क्षेत्रों को निशाना बना सकता है। इस बार पूरे ऑपरेशन के दौरान एयर डिफेंस और उसका संचालन बेहतरीन था, लेकिन इस बार हमने आबादी वाले क्षेत्रों में एयर डिफेंस पर ठीक से ध्यान नहीं दिया गया, लेकिन भविष्य में हमें इसके लिए तैयार रहना होगा।

पाकिस्तान को चीन से हमारे महत्वपूर्ण वैक्टरों के लाइव अपडेट मिल रहे थे : पिक्की द्वारा आयोजित 'न्यू एज मिलिट्री टेक्नोलॉजीज' कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने कहा कि जब डीजीएमओ स्तर की वार्ता चल रही थी, तो पाकिस्तान को चीन से हमारे महत्वपूर्ण वैक्टरों के लाइव अपडेट मिल रहे थे। ऐसे में यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां हमें असल में ज्यादा से ज्यादा और तेजी के साथ काम करने की जरूरत है।

चीन-तुर्किए और पाकिस्तान के गठबंधन को किया बेनकाब : अपने संबोधन में उन्होंने चीन-तुर्किए और पाकिस्तान के गठबंधन को बेनकाब करते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हम एक सीमा पर दो विरोधियों या असल में तीन से जंग लड़ रहे थे। पाकिस्तान अग्रिम मोर्चे पर था और चीन उसे हर संभव सहायता प्रदान कर रहा था। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के पास 81 फीसदी सैन्य हार्डवेयर चीनी है। इस अभियान में चीन ने एक तरह से अपने हथियारों का परीक्षण अन्य हथियारों के खिलाफ किया। पाकिस्तान एक तरह से उनके लिए एक प्रयोगशाला की तरह उपलब्ध था। तुर्की ने भी इस प्रकार की सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आखिरी घंटे में तय किए नौ ठिकानें जिन्हें निशाना बनाना है

पिक्की द्वारा आयोजित 'न्यू एज मिलिट्री टेक्नोलॉजीज' कार्यक्रम में बोलते हुए लेफ्टिनेंट जनरल राहुल आर सिंह ऑपरेशन सिंदूर के परिणामों पर भी बात की। उन्होंने कहा कि इसे हमें कुछ सबक मिले हैं। उन्होंने कहा कि पड़ोसी मुल्क में टारगेट की योजना और उनका चयन बहुत सारे डेटा पर आधारित था। यह प्रौद्योगिकी और मानव खुफिया जानकारी का उपयोग करके एकत्र किया गया था। हमने पाकिस्तान में कुल 21 टारगेट तय किए थे, जिनको निशाना बनाना था। फिर सेना की कार्रवाई से ठीक पहले आखिरी घंटे में यह तय किया गया कि 21 में से किन नौ ठिकानों को निशाना बनाना है।